रोशनी की लकीर

डा. राणा प्रताप गन्नौरी

Scanned by TapScanner

अनुक्रमणिका

डॉ० राणा गन्नौरी : एक परिचय—श्री ईश्वर चंद गर्ग ७

डॉ० राणा गन्नौरी : एक विवेकशील कवि—श्री शबाब ललित १०

ग़ज़लें—

१. शहर में कर्फ़्यू लगा है और सूनी है सड़क १३
२. यूं लबों को न खोलिये साहब १४
३. दिल के जज़्बात कह रहे हैं हम १५
४. कोई दिन और सब्र कर देखो १६
५. ज़िंदगी भी न ज़िंदगी-सी लगे १७
६. जो सदा आग के शोलों को हवा ही देंगे १८
७. रोशनी हद से ज़्यादा हो तो चुंधियाते हैं लोग १९
८. मेरी जानिब से तुम्हें हरगिज़ कोई खतरा न था २०
९. भूलकर भी न तुम बुरा करना २१
१०. जवानी का सब जोश मर जायेगा २२
११. आदमी की देखिए हुशियारियाँ २३
१२. और मैं सहमा हुआ हूँ भीगी बिल्ली की तरह २४
१३. रस्मी यह अना की है जल जाये तो जल जाये २५
१४. तक रहा है खला में क्या, जाने २६
१५. कहीं टूटी तो बाकी क्या रहेगा २७
१६. जो ज़ख्म वक्त के हाथों ने दिल को बख्शा है २८
१७. मूदमंद आपसे थोड़ी दूरी भी है २९
१८. बस वही तो हो सकेगा कामयाबे ज़िंदगी ३०
१९. उनसे बेगानगी मिटा न सके ३१
२०. यह न होना चाहिये था और यह होना चाहिये ३२
२१. सामने आइने के जाओगे ? ३३
२२. गर न पाएँगे जलाली बोतलें ३४
२३. मौत से आँखें मिलाकर मुस्करा सकता हूं मैं ३५
२४. प्रेम देश का ढूंढ रहे हो ग़द्दारों के बीच ३६

Scanned by TapScanner

२५. हमें बातों से भरमाने लगे हैं	३७
२६. वो चलन हो गए पुराने हैं	३८
२७. कतरा दरिया मत सोचा कर	३९
२८. इतना बेहाल अपना हाल न कर	४०
२९. क्या पूछो हो जग के लच्छन	४१
३०. सबने अपनी बात कही है	४२
३१. क्यों अफ़सोस में डूब रहे हैं बैठे नदी किनारे लोग	४३
३२. जिस तरफ़ देखिये अँधेरा है	४४
३३. बात हम मस्ती में ऐसी कह गये	४५
३४. हमको क्या करना था अफ़सोस यह क्या कर बैठे	४६
३५. मुझको भी तेरा ग़म खा गया है	४७
३६. तुमने ही जब नहीं सुनी मेरी	४८
३७. यह तिरे ज़ुल्म की कहानी है	४९
३८. सदियों की तपिश सहकर हम लोग गले होंगे	५०
३९. जो सवाबों की जज़ा देगा मुझे	५१
४०. जी में है तुझसे बोलें हम	५२
४१. हमारा फ़र्ज़ था आवाज़ दी है	५३
४२. राह में बिखरे रोड़े पत्थर	५४
४३. भाव जगत में हलचल है	५५
४४. इक ज़रा सी बात होती है बढ़ा देते हैं लोग	५६
४५. एक-इक पल गुज़ारना मुश्किल	५७
४६. उसके हाथों से उड़ेंगी आज मेरी धज्जियाँ	५८
४७. कैफ़ीयत कुछ ऐसी है	५९
४८. क्यों हमको तक रहे हो यह क्या बात है मियाँ	६०
४९. रोते-रोते नैन खोवोगे मियाँ	६१
५०. गाहे-गाहे अपने चेहरे को भी पढ़कर देखिये	६२
५१. अब क्या कहूं कि कैसे वो सपने बिखर गये	६३
५२. सोचने से क्या होगा अब तो सोचना यह है	६४
५३. मुझे ग़म छोड़ कर जाता नहीं है	६५
५४. प्रतिपल घूंट लहू के पीना	६६
५५. कोई गर पत्थरों को पूजे है	६७
५६. मैं ख़मोशी से खड़ा सुनता रहा	६८
५७. जिनमें अकसर ज़िंदगी के भी मुझे लाले पड़	६९

Scanned by TapScanner

५८. बात बनती नहीं बनाएँ क्या ७०
५९. मूंद के बाहर की ये आँखें जब अंदर को झाँका है ७१
६०. चेहरों पे और चेहरे लगाये हुए हैं लोग ७२
६१. तुमको पत्थर ही जो बनना है तो फिर बेहतर बनो ७३
६२. किस ज़माने में रहा करते हो तुम ७४
६३. बराबर काम चलता है तुम्हारे कारख़ाने में ७५
६४. चले छोड़कर लोग सामान अपना ७६
६५. मंज़िलें-मर्ग से गुज़रती है ७७
६६. चलन यह ज़माने का हम देखते हैं ७८
६७. कौन क़ातिल को मसीहा जाने ७९
६८. मैं तो लिखता जा रहा हूँ बोलता जाता है तू ८०

Scanned by TapScanner